INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

उरांव जनजाति की जीवन शैली छ.ग. के विशेष सन्दर्भ में

रंजीत सिंह
(समाजशास्त्र)

भौगोलिक वितरण –

उरांव जनजाति भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर छ.ग. राज्य के उत्तर आदिवासी क्षेत्र में निवासरत एक प्रमुख जनजाति समुदाय है उरांव जनजाति छ.ग. राज्य के सरगुजा संभाग के अर्न्तगत जिला–अम्बिकापुर जशपुर, रायगढ़, बिलासपुर संभाग के जिला–बिलासपुर कोरबा, जांजगीर चांपा, एवं दुर्ग संभाग के जिला–राजनांदगांव में निवासरत है। जनगणना 2011 के अनुसार उरॉव जनजाति की कुल जनसंख्या 748789 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 373065 एवं महिला जनसंख्या 375724 है। जनसंख्यात्मक आधार पर उरांव जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य में गोंड़ एवं कंवर के बाद तीसरे क्रम की सर्वाधिक बड़ी जनजाति है। उरांव जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य की अनुसूचित जनजाति की सूची में अनुक्रमांक 33 में शामिल है।

उत्पत्ति :–

उरांव शब्द के नामकरण के संबंध में अवधारणा है कि, सर्वप्रथम महादेव ने जंगल में लकड़ी और पौधों को काट कर "बेवरा" बनाना सिखाया जिसमें कृषि उपज उत्पन्न कर जीविकोपार्जन करते थे। कालान्तर में जीव जन्तुओं व आबादी की वृद्धि के फलस्वरूप जंगलों की कमी होने लगी और "बेवरा" बनाने में परेशानी होने लगी तब पूर्वज बड़े पेड़ पौधे के स्थान पर उराई (घास) काट कर कृषि करने लगे। उराई का सफाई कार्य करके कृषि उपज से जीवन निर्वाह करने लगे। कई पीढ़ी तक यह कार्य चलता रहा और व्यवस्था के रूप में परिवर्तित हो गया, पेशा के आधार पर जनसमुदाय या पड़ोसी समूह इन्हें उरांव पुकारने लगे और इनकी जाति उरांव कहलाने लगी।

आवास :–

उरांव निवासित ग्रामों में लगभग 40–50 मकान होते है, जिसे हम झोपड़ीनुमा न कहकर बंगलानुमा कह सकते है। एक बड़ा हाल जिसे मिट्टी की दीवार से तैयार किया जाता है जिसमें दो दरवाजा होता है। उक्त दीवार में लकड़ी की बल्ली से छत तैयार करते हैं तथा दीवार के चारों तरफ बरामदा निकाल कर छत को खप्पर से छा देते है। जिसमें बरामदे वाले जगह के आगे रसोई घर, बैठक या शयन कक्ष बनाया जाता है एवं मध्य भाग अन्नागार या कीमती सामान को रखने के लिए उपयोग किया जाता है। पीछे के बरामदे वाले भाग में मवेशी रखते है। जगह पर्याप्त रहा तो आवास से लगे स्थान पर छोटी बाड़ी बना लिया जाता है।

वस्त्र एवं आभूषण :–

उरांव जनजाति में पुरूष वर्ग द्वारा सामान्य छोटी धोती तथा बंडी या अंगरखा पहना जाता है किन्तु वर्तमान सभ्यता शिक्षा एवं मिशनरी सभ्यता के कारण गांव के कृषक भी आधुनिक परिधानों में दिखाई देते है। स्त्रियों की सामान्य पोषाक साड़ी–ब्लाउज है। उराँव स्त्रियाँ हाथ में ककना, कान में बिड़िया, बालों में कलिंगा, पैरों में पैड़ा (पैरी) आदि आभूषणों का उपयोग विशेष त्यौहार जैसे करमा में पहनती है उरांव स्त्रियाँ एवं बालिकाएँ श्रृंगार के रूप में मुख्य रूप से गोदना गोदवाया करती थी और यह विश्वास किया जाता था कि यह श्रृंगार मरणोपरांत भी साथ रहेगा।

घरेलू उपकरण :–

उरांव परिवारों के पास घरेलू उपकरणों में मिट्टी निर्मित चुल्हें का उपयोग करते है साथ–साथ चावल, दाल सब्जी एवं विभिन्न प्रकार के पकवान बनाने के लिए मिट्टी, स्टील, तांबा, कांसा से निर्मित बर्तन जैसे डेचकी, कढ़ाही, तवा, भोजन हेतु थाली, कटोरी पानी पीने के लिए गिलास, लोटा, अनाज साफ करने के लिए सुपा सब्जी काटने के लिए चाकू, हसिया, (परसूल), सामान रखने के लिए टोकरी अनाज व मसाला पिसने के लिए जांता, चटनी पिसने के लिए सील–लोढ़ा आदि का उपयोग करते है।

कृषि उपकरण एवं आखेट :–

उरांव जनजाति कृषि पेशे को अपनाया हुआ है उरांव जनजाति के लोगों के पास बहुत सारे कृषि उपकरण मौजूद है जिसमें हल, नांगर, उसंगी, कुदाली, फौड़ा, गैंती, सब्बल, बसुला, बेलन, छेनी कुल्हाड़ी, हसिया, सुपा, कोवर, सुपा, बौगी, गिड़वा आदि।

उरांव जनजाति में आखेट उरांव पुरूष के अलावा उरांव स्त्रियां भी कुशल शिकारी हुआ करती है। यह रीत वर्तमान में प्रचलित है। जिसे "जनी शिकार" (महिला शिकारी) के नाम से जाना जाता है। उरांव जाति में छोटे–छोटे जीवन जन्तुओं के शिकार एवं मछली पकड़ने के उपकरणों में–जाल, कुम, चाकू, भाल, गुलेल, फांदा, लस्सा, कुल्हाड़ी आदि पाये जाते हैं।

उरांव समुदाय में गोत्र :–

उरांव जनजाति में गोत्र एक से अधिक वंशो का समूह होता है जिसे समस्त रक्त संबंधियों द्वारा अपने पिता पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त किया जाता है। एक गोत्र के समस्त परिवार या व्यक्ति एक काल्पनिक पूर्वज के संतान/वंशज होना मानते है उरांव जाति बर्हिविवाही गोत्र समूह है। इनके गोत्र चिन्ह पशु, पक्षी, जीव–जन्तु, वृक्ष आदि होते है इनमें पन्ना, टोप्पो, तिर्की, खाखा, केरकेटा, खलखो तिग्गा, मिंज, बड़ा, कुजूर, लकड़ा बखला, खेस एवं बेक गोत्र जाये जाते हैं जिनके गोत्र चिन्ह क्रमशः लोहा, एक पक्षी, बन्दर, कछुआ, मछली, बरगद वृक्ष, लता वृक्ष, बाघ, धान, है।

देवी–देवता एवं पर्व :–

उरांव जनजाति में मुख्य रूप से सूर्य (बीड़ी), चन्द्रमा (चन्दो) धरती (खेखेल), सरना (साल वृक्षों का समूह), पत्थर (महादेव), करम देव (वृक्ष) पितर आदि होते है। उरांव जाति के प्रमुख देवी देवताओं के अलावा इनके ग्राम स्तर के देवी देवता भी होते है ग्राम देवता में मुख्य है पाठ महादन जिनका कार्य/दायित्व पूरे ग्रामवासियों की सुरक्षा या देखभाल करना। ग्राम देवी–देवताओं की पूजा अराधना निर्धारित समयानुसार दिन, माह और वर्ष के आधार पर किया जाता है जिसमें तेल, सिन्दूर, मुर्गी, बकरा, सुअर, मुर्गा, अर्पित की जाती है।

सरहुल या खद्दी पर्व उरावों का मुख्य पर्व है उरांव जनजाति में सरहुल पर्व, टुण्टा पर्व, तुसर्गो पर्व, करमा पर्व, सोहरई पर्व जलसा पर्व, कबूर पर्व आदि मनाया जाता है।

अर्थव्यवस्था :–

उरांव जनजाति मूलतः कृषक है उनके जीवन यापन का मुख्य साधन कृषि एवं वनोपज पर आधारित है। उरांव जनजाति में अन्न के रूप में धान, मक्का, गोंदली व गंगई, गेहूं, दलहन में कुल्थी, अरहर उड़द, मसूर, चना, मटर एवं तिलहन में सरसों जटंगी की उपज मुख्य रूप से किया जाता है। उरांव जनजाति में वनोपज संकलन एवं विपणन के माध्यम से अपनी जीविका का निर्वहन करते है। जिसमें मुख्यतः ईंधन हेतु लकड़ी खाद्य हेतु फल–फूल, कंद–मूल, चार, महुआ, आँवला, आम, हर्रा,–बेहरा एवं जड़ी बूटी आदि आते है। आर्थिक लाभ की दृष्टि से तेन्दूपत्ता का संग्रहण सरई, महुआ, चिरौंजी का मार्च से अप्रैल माह के मध्य किया जाता है।

व्यवसाय :–

उरांव समाज में धरती जमीन पथरीली एवं पठारी उबड़–खाबड़ ऊँची–नीची एवं मानसूनी वर्षा पर निर्भरता के कारण फसलों की पैदावार की मात्रा बहुत कम होती है। अतः जीविकोपार्जन के लिए इन्हें अन्य पड़ोसियों के खेतों में कृषि कार्य या मजदूरी के लिए जाना पड़ता है। इसके साथ ही पंचायतो के द्वारा शासकीय कार्य जैसे तालाब, भवन, रोड आदि के निर्माण में समयानुसार प्राप्त होने पर मजदूरी कार्य करके आर्थिक लाभ या नगद राशि प्राप्त किया जाता है। उरांव एक कृषि प्रधान समुदाय है। कृषक समुदाय होने के कारण ये पशु पालक भी होते है। यह समुदाय कृषि कार्य को पूर्ण करने के लिए पशुपालन भी करता है। पशुपालन में यह समुदाय मुख्य रूप से गाय, बैल, भैंस, बकरी, मुर्गी का पालन केवल निजी उपयोग के उद्देश्य से किया जाता है।

निष्कर्ष :–

उरांव लोग, जिन्हें कुरूख के नाम से भी जाना जाता है। द्रविड़ भाषी आदिवासी समूह है जो मुख्य रूप से छ.ग. के जशपुर सरगुजा और रायगढ़ में ज्यादातर निवासरत है। उरांव जनजाति की अपनी विशिष्ट

जीवन शैली रीति–रिवाज, सांस्कृतिक पहचान रखती है। वर्तमान में उरांव जनजाति के द्वारा आज भी परम्परागत कृषि किया जाता है। उरांव जनजाति वनोपज संकलन एवं विपणन के माध्यम से अपनी जीवन का निर्वहन करते हैं। वनोपज का मुख्य उद्देश्य आर्थिक नगद लाभ प्राप्त करना होता है। शासन द्वारा इंदिरा/प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से लोगों को पक्के आवास उपलब्ध करा रही है। पेयजल योजना, आंगनबाड़ी, पहुंच मार्ग, विद्युत कनेक्शन, प्राथमिक शाला आदि से जोड़ रहा है जिससे उनका जीवन स्तर ऊँचा उठ सके। क्षेत्र में उपस्वास्थ्य केन्द्र सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा ग्रामों में सामुदायिक विकास के दृष्टिगत तालाब निर्माण, पुल–पुलिया निर्माण, रपटा निर्माण आदि योजनाएँ चलाकर सकारात्मक प्रभाव उनके सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर पर विकास हो रहा है। जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Census of India 2011
2. तिवारी, विजय कुमार छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ हिमालय पब्लिशिंग हाऊस 2001
3. दोषी एस.एल. एवं जैन, पी.सी. – जनजातीय समाजशास्त्र रावत पब्लिकेशन 2020
4. सैनी डॉ. अभिलाषा एवं डॉ. बी के देवांगन, पंचशील पुस्तक मंदिर, राजस्थान 2022
5. https://tribal.cg.gov.in
6. https://www.chhattisgarhjanjati.com
7. https://cgtrti.gov.in.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM